VISION IAS
M 05 SEP 2017
N
SUBMITTED ... HOURS

VISION IAS

www.visionias.in

SUBJECT:		Test Code:	9	3	1	
Name of Candidate	RHEECHA RATNAM					
Medium Hindi/Eng.	HINDI	Registration Number	4	6	8	0
Center	Mukrjee Nagar	Date	5	0	9	17

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न-पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

1/8-B, 2nd Floor, Building- Apsara Arcade, Near Gate-7 Karol Bagh Metro Station, Pusa Road, Karol Bagh, Delhi – 110005

EVALUATION INDICATORS

1. Alignment Competence
2. Context Competence
3. Content Competence
4. Language Competence
5. Introduction Competence
6. Structure - Presentation Competence
7. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Section A

मशीनों का उदय : एक अवसर अथवा मानवता के लिए खतरा।

हाल के वर्षों में मशीनों के उदय को लेकर, बहस गंभीर होती जा रही है। फेसबुक के संस्थापक मॉर्क जुकरबर्ग व टेस्ला कार के संस्थापक एलन मॉस्क के मध्य, कृत्रिम बुद्धिमता युक्त मशीनों तथा आने वाले वर्षों में उनके प्रभाव को लेकर विवाद छिड़ गया।

प्रख्यात भौतिकशास्त्री स्टीफन हॉकिंग ने तो, मशीनों को मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा बताया है।

इस निबंध के माध्यम से हम निम्नलिखित प्रश्नों का अवलोकन करेंगे :-

- औद्योगिक क्रांति 4.0 क्या है, व इसके क्या निहितार्थ हैं ?

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

- मशीनों के विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ते प्रयोग व इन्हें लेकर उठ रही चिंताएं क्या हैं?

मशीनों का उदय, क्या सचमुच मानवता के लिए एक खतरा है, या एक अवसर?

औद्योगिक क्रांति 4.0

औद्योगिक क्रांति 4.0, कृत्रिम बुद्धिमता युक्त मशीनों तथा ऑटोमेशन के बढ़ते प्रयोग से जुड़ी हुई है।

इस क्रांति के कारण, आने वाले वर्षों में मशीनें, विभिन्न क्षेत्रों में मानवों को प्रतिस्थापित कर देंगी। उच्च कंप्यूटेशनल क्षमता युक्त मशीनें, जटिल से जटिल समस्याओं का समाधान ~~[illegible]~~ मिनटों में कर देंगी।

औद्योगिक क्रांति 4.0, मानव सभ्यता के इतिहास में, मील का पत्थर साबित हो रही है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

औद्योगिक क्रांति 4.0 से जुड़े विभिन्न निहितार्थ होंगे - उच्च कौशल व बुद्धिमता युक्त मशीनें, अब मेडिकल, स्पेस क्षेत्र में बड़ी भूमिका निभाएंगी। इससे जटिल बीमारियों के इलाज ढूंढने में आसानी होगी।

हाल के वर्षों में मशीनों का उपयोग, विभिन्न क्षेत्रों में अप्रत्याशित रूप से बढ़ा है।

अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावों के दौरान, दोनों उम्मीदवारों- डोनाल्ड ट्रंप व हिलेरी क्लिंटन ने, ऑटोमेटिक ट्विटर फीड का प्रयोग किया, जिसे चुनावों में निर्णायक भूमिका निभाने हेतु जिम्मेदार माना जा रहा है।

आर्टिफिशयल इंटेलिजेंस युक्त मशीनों का प्रयोग बैंकिंग व शेयर बाजारों में द्रुत गति से हो रहा है। यहाँ तक कि निवेश के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखो)

निर्णयों को लेने में मशीनों की सटीकता के कारण, कई बड़ी निवेशक कंपनियों - S&P, मॉर्गन स्टैनली ने, कृत्रिम बुद्धिमता युक्त मशीनों के निर्माण पर बल दिया है।

चिकित्सा क्षेत्र में, कृत्रिम बुद्धिमता युक्त मशीनों का प्रयोग उल्लेखनीय है, हाल ही में HP द्वारा विकसित मशीन ने, कैंसर की सही पहचान की, तथा उसके द्वारा बताई गई दवाएं, डॉक्टरों द्वारा बताई जाने वाली दवाओं के समान ही थी।

स्पेस तकनीक व मौसम के पूर्वानुमान हेतु, पहले भी सुपरकंप्यूटर का प्रयोग किया जाता रहा है, तथा हाल के वर्षों में, मौसम संबंधी पूर्वानुमानों में सटिकता आई है, जिसका श्रेय मशीनों को जाता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जापान में घटती तथा वृद्ध होती आबादी के मद्देनजर, विभिन्न कार्यों हेतु मशीनों का प्रयोग प्रारंभ हुआ है।

स्पष्ट है कि मशीनों के प्रयोग में हाल के वर्षों में वृद्धि हुई है, तथा इसका लाभ मनुष्यों को मिला है, फिर हाल के वर्षों में मशीनों के बढ़ते प्रयोग को लेकर चिंता क्यों जताई जा रही है?

मशीनों का प्रयोग : विभिन्न क्षेत्रों पर इसका प्रभाव

हाल के वर्षों में मशीनों के प्रयोग का प्रभाव, रोजगार पर सर्वाधिक रूप से पड़ता दिख रहा है।

पिछले वर्ष वर्ल्ड बैंक अध्यक्ष ने कहा था कि, कृत्रिम बुद्धिमता व ऑटोमेशन के कारण, आने वाले वर्षों में भारत अपनी 69% नौकरियाँ खो देगा।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखो)

ऑटोमेशन के कारण, विशेष रूप से विनिर्माण क्षेत्र में, रोजगार की समस्या पैदा हो गई है।

कपड़ा विनिर्माता, कार विनिर्माता इत्यादि कंपनियाँ, ऑटोमेशन को प्रोत्साहन दे रही हैं; जिसके कारण, विकासशील देशों में विशेष रूप से, विनिर्माण क्षेत्र में नौकरियों के खोने का खतरा पैदा हो गया है।

उदाहरण :- जर्मनी में, एडिडास (Adidas) ने, पूर्णरूपेण ऑटोमेटेड संयंत्र खोला है।

ऑटोमेशन के कारण ही कहीं न कहीं भारत की 'मेक इन इंडिया' का अपेक्षित लाभ नहीं प्राप्त हो रहा है।

हाल के वर्षों में स्वचालित कारों (गूगल) के कारण, आने वाले वर्षों में निम्न कौशल युक्त रोजगार जैसे :- ड्राइवर इत्यादि के समाप्त होने का खतरा बढ़ गया है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

एलेन मॉस्क ने, ऑटोमेशन के कारण, विनिर्माण क्षेत्र व कृत्रिम बुद्धिमता युक्त मशीनों के कारण, उच्च कौशलयुक्त श्रेणियों में, नौकरी के अवसरों की होने वाली कमी की घोषणा की है।

मशीनों के अधिकाधिक प्रयोग का खतरा न सिर्फ आर्थिक क्षेत्र पर, बल्कि आने वाले वर्षों में सामाजिक स्तर पर भी पड़ेगा।

मशीनों के अधिकाधिक प्रयोग से, समाज में व्याप्त असमानता में वृद्धि होने की आशंका है। गरीब वर्ग तथा निम्न कौशल युक्त वर्ग को मशीनों के अधिकाधिक उपयोग का दंश झेलना पड़ेगा।

पूर्व में वैश्वीकरण की प्रक्रिया में पिछड़े इस वर्ग के लिए, बढ़ते मशीनीकरण ने, आजीविका संबंधी नई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मशीनों के बढ़ते प्रयोग से, नव उपनिवेशवाद की प्रक्रिया को भी बल मिलेगा। इससे विकासशील व अल्प विकसित देश, विकसित देशों द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करने हेतु विवश हो जाएँगे।

इससे वैश्विक स्तर पर, विकसित देशों का वर्चस्व और बढ़ेगा।

मशीनों का प्रयोग : मानवता के हित में?

मशीनों का अधिकाधिक प्रयोग, मानवता के लिए खतरा सिद्ध होगा, ऐसे विचार भी हाल के दिनों में सामने आ रहे हैं।

फेसबुक द्वारा विकसित चैट बॉक्सों द्वारा, आपस में, मशीनी भाषा (Machine language) में किए गए संवाद ने, इस आशंका को और बल प्रदान किया है।

संभव है कि आने वाले वर्षों में मशीनें, मानव नियंत्रण से

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मुक्त होकर, आपस में संवाद स्थापित करें, मानवीय निर्देशों को मानने से इंकार कर दें या मानवों के विरुद्ध विद्रोह कर दें।

मशीनों का प्रयोग : आगे का मार्ग

हाल के वर्षों में, मशीनों के बढ़ते उपयोग को लेकर, उत्पन्न होने वाले खतरों विशेषकर रोजगार संबंधी चुनौती, के लिए, सिलिकॉन वैली के उद्यमियों ने (सार्वभौम बुनियादी आय' के विचार को समर्थन (UBI) दिया है।

UBI के द्वारा, सरकार अपने प्रत्येक नागरिक को एक सुनिश्चित आय प्रदान करेगी, जिससे मशीनीकरण का खतरा कम हो सके।

इसके अतिरिक्त, मशीनों के प्रयोग को लेकर, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, विधि निर्माण की भी आवश्यकता है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

मशीनों का प्रयोग किन क्षेत्रों में व किस रूप में किया जाएगा, यह तय करना आवश्यक होगा।

यह स्पष्ट है कि मशीनों के प्रयोग के अपने लाभ हैं - मशीनों का किसी व्यक्ति की अपेक्षा, लंबा जीवन-काल होगा, इसलिए इनका प्रयोग लंबे समय तक किया जा सकेगा।

इसके अतिरिक्त यह भविष्य की नई संभावनाओं के मार्ग खोलेगा।

हालांकि यह आवश्यक है कि, आने वाले वर्षों में मशीनों के बढ़ते प्रचलन व इनसे प्राप्त लाभ व इनके नुकसान का न सिर्फ अवलोकन किया जाए, बल्कि इस दिशा में राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, उकीकृत

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कदम उठाया जाए ; ताकि मानवता, अपने द्वारा निर्मित मशीनों का लाभ उठाने में सक्षम हो , तथा यह कदम एक अवसर हो न कि मानवता के लिए खतरा ।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Section B

अधिकार आधारित दृष्टिकोण सामाजिक आर्थिक विकास की कुंजी है

अधिकारों से हमारा तात्पर्य है, वैसी बुनियादी चीजें, जिसे पाना मानव का हक है। मानव जीवन हेतु, न्यूनतम अधिकारों को प्राप्त करने का संघर्ष पुराना है।

हाल के वर्षों में, लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के सुदृढ़ होने के पश्चात, नीति-निर्माताओं ने, नागरिकों को अधिकार आधारित अधिनियमों द्वारा सशक्त करने का मार्ग अपनाया है।

अधिकार आधारित दृष्टिकोण :-

अधिकार आधारित दृष्टिकोण का मुख्य उद्देश्य, नागरिकों को विभिन्न विषयों के संबंध में अधिकार प्रदान करना है। उदाहरण :- शिक्षा का अधिकार।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

विभिन्न योजनाओं को अधिकार आधारित दृष्टिकोण द्वारा लागू करने से, नागरिक उन योजनाओं का लाभ, ज्यादा अच्छे ढंग से उठा पाता है।

अधिकारों की संकल्पना, सर्वप्रथम, फ्रांसीसी क्रांति के दौरान व्यक्त हुई, जिसमें मुख्यतः राजनीतिक अधिकार प्राप्त करना, उद्देश्य था। परंतु, आज अधिकार सिर्फ राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहे हैं, बल्कि सामाजिक व आर्थिक विकास की कुंजी के रूप में उनका प्रचलन बढ़ रहा है।

भारत व अधिकार आधारित दृष्टिकोण

भारतीय संविधान निर्माताओं ने, संविधान निर्माण के समय, मूल अधिकारों (अनु 12-35) व नीति-निदेशक तत्वों (अनु. 36-51) के माध्यम

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

से नागरिकों के राजनीतिक - आर्थिक व सामाजिक अधिकारों का उल्लेख किया था।

नीति निदेशक तत्व विशेष रूप से व्यक्ति के विभिन्न, सामाजिक व आर्थिक अधिकारों से संबंधित हैं। - उदाहरण :-

समान कार्य के लिए समान वेतन, काम का अधिकार, लोक सहायता प्राप्त करने का अधिकार इत्यादि।

हालांकि इन सभी अधिकारों को सिर्फ संसद द्वारा अधिनियमों के माध्यम से ही प्रवर्तनीय कराया जा सकता है।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री, अमर्त्य सेन, देश के नागरिकों के सामाजिक-आर्थिक विकास को सुनिश्चित करने हेतु, अधिकार आधारित दृष्टिकोण को श्रेष्ठतम मानते हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भारत ने, भी अपने नागरिकों के लिए विविध अधिकार आधारित, अधिनियमों का निर्माण किया है, जिसका उद्देश्य मानव विकास है।

अधिकार आधारित दृष्टिकोण व आर्थिक विकास

केंद्र सरकार ने, मनरेगा अधिनियम के माध्यम से लोगों को 'काम करने का अधिकार' प्रदान किया।

मनरेगा अधिनियम, रोजगार गारंटी योजना है, जिसके अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्र के किसी भी परिवार के व्यस्क सदस्य को 100 दिनों का, अकुशल कार्य प्राप्त करने का अधिकार है।

मनरेगा अधिनियम, ~~[illegible]~~ द्वारा 'काम के अधिकार' की मान्यता ने, ग्रामीण क्षेत्रों में, सकरात्मक प्रभाव डाला है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मनरेगा लागू होने के पश्चात, ग्रामीण क्षेत्रों के प्रवसन की दर में कमी आई है, महिलाओं को ग्राम रोजगार (मनरेगा के अंतर्गत) का राष्ट्रीय औसत 50% से अधिक है, ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि परिसंपत्तियों का सृजन हुआ है, तथा ग्रामीण निर्धनता दर में कमी आई है।

स्पष्ट है कि मनरेगा का ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक सूचकांकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इसके अतिरिक्त मनरेगा में उपबंधित सामाजिक ~~xxxx~~ ऑडिट का लाभ भी, ग्रामीण क्षेत्रों में इस योजना के कार्यसंचालन में प्राप्त हुआ है।

हाल ही में, आर्थिक सर्वेक्षण 2016-17 में, भारत में सार्वभौम बुनियादी आय (UBI) लागू करने की संभावनाओं पर चर्चा की गई है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

* UBI को सरकार, अधिकार आधारित दृष्टिकोण के माध्यम से भी लागू कर सकती है।

सभी नागरिकों को जीवन-यापन हेतु, न्यूनतम आय प्राप्त करने का अधिकार होना चाहिए, विशेषे देश में, निर्धनता दर में कमी आएगी।

उच्चतम न्यायालय ने हाल ही में दिए अपने निर्णय में, संविदा कर्मचारियों को भी नियमित कर्मचारियों के समान (बराबर) वेतन देने का निर्देश दिया।

केंद्र सरकार, इस निर्णय को लागू करने हेतु अधिनियम का निर्माण कर सकती है, जिसके अंतर्गत, समान कार्य के लिए समान वेतन, प्राप्त करना, प्रत्येक नागरिक का अधिकार होना चाहिए।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अधिकार आधारित दृष्टिकोण व सामाजिक विकास

सामाजिक विकास हेतु भी, केंद्र सरकार ने विभिन्न अधिकार आधारित, दृष्टिकोण संबंधी अधिनियमों का निर्माण किया है। (RTE) "शिक्षा का अधिकार", जिसके द्वारा केंद्र सरकार ने 6-14 वर्ष के बच्चों को अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्रदान किया।

RTE के लागू होने के पश्चात, भारत में प्राथमिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न सूचकांकों में, सकारात्मक प्रभाव दर्ज किए हैं। प्राथमिक शिक्षा स्तर पर छात्रों का नामांकन, लगभग सात-प्रतिशत हो गया है, बालिकाओं के विद्यालय नामांकन में वृद्धि हुई है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हालाँकि, यह प्रवृत्ति, उच्च तथा उच्चतर शिक्षा क्षेत्र में दृष्टिगोचर नहीं हो रही है, जिसका एक कारण, इन क्षेत्रों से जुड़े 'शिक्षा का अधिकार' की अनुपस्थिति भी है।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के माध्यम से भारतीय नागरिकों 'भोजन का अधिकार' प्रदान किया गया। इस अधिनियम के अंतर्गत लगभग 75% आबादी कवर है। 'भोजन का अधिकार' एक क्रांतिकारी कदम है, जो मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक को लक्षित करता है।

भारत के सभी राज्यों में 2016 से 'भोजन का अधिकार' लागू हो गया है, तथा आने वाले वर्षों में आशा है कि

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

यह योजना देश में भूख से जुड़ी मौतों व कुपोषण की समस्या का समाधान कर पाने में सफल होगी।

हाल ही में जारी राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति-2016 में अपने प्रारूप नीति के अंतर्गत उल्लेखित 'स्वास्थ्य के अधिकार' को शामिल नहीं किया गया है। भारत, में स्वास्थ्य सेवाओं के महंगे (Out of Pocket Expenditure) होने के कारण प्रति वर्ष, हजारों परिवार गरीबी रेखा के नीचे आ जाते हैं। आवश्यकता है कि भारत में स्वास्थ्य के अधिकार को लागू किया जाए।

संविधान के अनु० 41 में विभिन्न परिस्थितियों - जैसे:-

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अपंगता, वृद्धावस्था इत्यादि के दौरान लोक सहायता प्राप्त करने का अधिकार उपबंधित है।

हाल ही में देश में, वृद्धों की संख्या में वृद्धि तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की कमी ने, इस ओर नीति-निर्देशकों का ध्यान आकर्षित किया है।

एक नवाचारी तरीका यह होगा कि बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में वृद्धजनों को भी लोकसहायता प्राप्त करने का अधिकार प्रदान किया जाए।

निशक्त लोगों हेतु, लोक सहायता प्राप्त करने का अधिकार, उनका सामाजिक सशक्तीकरण करने में प्रभावी सिद्ध होगा।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अधिकार आधारित दृष्टिकोण नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाती है, तथा एक सशक्त नागरिक समाज का निर्माण करती है। इसलिए आवश्यक है कि, विभिन्न नीतियों के क्रियान्वयन में इस दृष्टिकोण को लागू किया जाए।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

✓ अधिकार आधारित दृष्टिकोण

↳ जो मानव का हक है।

↳ अमर्त्य सेन

भारत में अधिकार आधारि. -

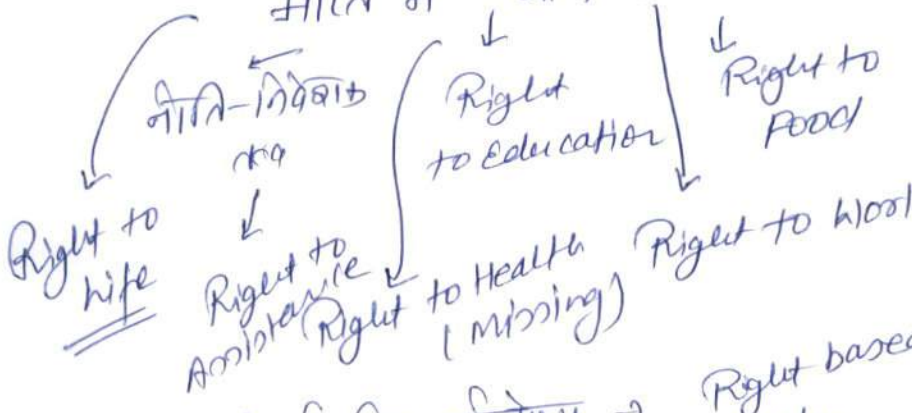

- नीति-निदेशक तत्व
  - Right to Life
  - Right to Assistance (Right to Health (Missing))
- Right to Education
- Right to Food
- Right to Work

↳ अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य → Right based approach
↳ अमेरिका में।

Economic

↳ Right to Work

↳ Right to have a minimum wage.

↳ UBI → make it as right based.

socio → Right to education, Right to health, Right to food, Right to Assistance.

↳ राजनीतिक अधिकार

✓ गंगा यमुना → (Right)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

⇒ Active Judicary
- ↳ PIL
- ↳ हुसैनारा खातून

Rise of machine ↳
- ↳ AI + Automation
  - ↳ राजनीतिक
  - ↳ सामाजिक
  - ↳ आर्थिक
  - ↳ सांस्कृतिक
  - ↳

Rise of Machine
- राजनीतिक
  - ↳ U.S. election + twitterfeed.
  - ↳ Need for an international regulation on machines.
  - ↳ नीति निर्माताओं के समक्ष समस्या
- सामाजिक
  - L असमानता
  - L गरीब वर्ग, निम्न कौशलवर्गी के लोगों को नुकसान
- आर्थिक
  - L AI (↑)
  - ↳ ज्यादा लोग बेरोजगार पहले का कौशल high था।
- सांस्कृतिक
  - (मशीन तकनीकी

↳ मशीन : फायदा → ✓ लंबे समय तक लाभ
✓ एक मशीन → ...

↳ मशीन का use → Banking
- ↳ consultancy.
- ↳ Political campaign
- ↳ space technology
- ↳ Medical sector.

Man v/s Machine